

ASHA ARCHIVES

1.735

गुलामाहा

ASHA ARCHIVES

1.735

SHRI ११११११११

१ॐ नमो भगवते ॥ श्री महाशिव उवाच ॥ १ ॥ नमस्त्रिभुवनेभ्यः
वह्मणे विश्वरूपिणे ॥ इति श्रुत्वा यथाशक्तं ॥ गुरुं भवतु मे भगवन् ॥ यत्
१ यसादा देवोपि सर्वज्ञः समिवो भवेत् ॥ तौ नो भियर मे भानौ सर्व
वापिणी मीश्वरी ॥ २ ॥ ब्रह्माण्डकोटितक्षाणि भस्मसां कुर्वते यय
॥ तौ कालाग्रानि रतौ ॥ युक्तकालीनमास्य ह ॥ ३ ॥ यया सर्वं वितनुः
ते ॥ यो विश्वत्रियुनः पुनः ॥ यस्या चने न देवोपि भिवः सर्वज्ञो

गवित ॥ ४ ॥ सृष्टिस्थित्यनुकृती स भवेत्परमेष्ठि ॥ शिवं भावयन्
मी दुर्गं जगतां वज्रिनी ॥ ५ ॥ पुरा युगादौ रुडेण भक्त्या संधाय
कुर्वीत ॥ ६ ॥ या प्रबान् परमं जानी सवराजं महासुतं ॥ ७ ॥ शिवेन विल
वेदं विष्टं नावह्यो ददौ ॥ ब्रह्माण्डं च विश्वं यः विश्वे म
नवेद ददौ ॥ ८ ॥ मनुना राजा कामेन सदा जज्ञे कमानसः ॥ पयोः
धिमैखला पृथ्वी सभा समनु रकरा ॥ ९ ॥ भविना वृत्तेर्विना ध्या

नैर्विना पूजा जपैः सर्वैः ॥ वीरसाधन होमादि विना श्रीसुफलपः
दा ॥ २ ॥ नानया सह मंत्रोत्र विद्यते भुवनोदरे ॥ तस्मात्सर्वपरित्यज्यः
पठेन्नाम सहस्रकं ॥ १० ॥ यस्या नाम सहस्रेण न पुनर्योनि भाग्यवे
त ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पठनीयं समाहितश्रद्धा ॥ ११ ॥ एकग्रसतिरयोगी
कृत्वा ध्यायेत्तद्देव्यं ॥ ॥ ॐ नमः श्रीगुह्यकालीदेवता सप्रना
म सहस्रं श्रीसदाशिवस्य ॥ ॐ नमः श्रीगुह्यकालीदेव

ता ॥ ॐ वीजं केंद्रं शक्तिं ह्रीं कीलकं वृक्षं च दने विनियोगः ॥ ॥ ध्यान
वृक्षादिपंचकं युगेभ्युतिदिकतीर्त्तं मुण्डेषु भैरवमित्रावलया नले
षु ॥ तस्योर्ध्वगोददमभारखदविडुमाभे पद्मे स्थितौ भगवती पारमी
दशासी ॥ १२ ॥ सिंहे भकोलकपि सदा हरकृता ह्ययोगेश्वरी मकर
रमानवपीति वक्ष्यी ॥ मूली कुशा परशु मुद्गर पाशा पात्रं खट्वांगव
लकभिरोक्ति तपाणि पद्मी ॥ १३ ॥ ॥ ॐ ह्रीं केंद्रं ह्रीं ह्रीं नमः

४॥३॥ गुरु काली महा काली भद्र काली सुमे गला ॥ परा परेश्वरी धूम्रा
पर मेहरी वरपदा ॥ ४॥ चणिका चर्चिका दुर्गा चामुण्डा भववाहिनी
॥ चण्डा घण्टा चण्डा हा सा चण्डा वेताल वाहिनी ॥ ५॥ वारुण सन्न व
दना चारु चक्र पकाशिनी ॥ चण्डेश्वर पाताचरी चण्डा फेर वराशिनी
॥ ६॥ पुचण्डा देवदर्य धी समस्त पातकापहा ॥ भद्रा भद्रेश्वरी भी
मा नीवणी भैरव प्रिया ॥ ७॥ महाभाग्य पदा भाग्या नववंध विमोः

विनी ॥ ८॥ भवानी भवरो गघ्री भक्त भक्ति प्रवोधिनी ॥ महा मोह प्रभ
मनी महोत्साह प्रसादिनी ॥ ९॥ हमा कात्रि प्रभाज्योत्सा चण्ड योगे
श्वरी शिक ॥ तेज रूप तेज मया दिव्य तेज प्रकाशिनी ॥ १०॥ ज्योति
वक्रा महा चण्ड योगेश्वरी महा प्रभा ॥ सिंह वक्रा भवा वक्रा कपि
वक्रा गजानना ॥ ११॥ तार्क्ष्य वक्रा भं कु वक्रा जट वक्रा डयान
ना ॥ नर वक्रा नीलवर्णा चतुष्टय वाश दोरुता ॥ १२॥ विडम्ब मु

डि का हस्त नर मुण्डलि भूषिता ॥ सुक मुण्ड विभूषा व. ना नारत्नी विभू
षिता ॥ २३ ॥ दु ल य भ म नी रो डी. कालि का शी ह वा हि नी ॥ नर मुण्ड विभू
षा व. सुक मुण्ड विभूषिता ॥ २४ ॥ काल का ली टी प्र का ली. प धा ना व
लि भ द्धि णी ॥ अ या ज य त्री वि ज यो ज य दु ४ स्व प्र ना मि नी ॥ २५ ॥ व ह
षे ता स ना वा रु. क म लो क म ल पि या ॥ दी प्र नि द्वा ल ल छि द्वा वि यु जिः
द्वा ज ग प द्वा ॥ २६ ॥ च डो र्क व दि न य ना वि लु पे ता स न स्मि ता ॥ सु

र्ये मण्डल म ध्य स्था ना ना क र्म फ ल प द्वा ॥ २७ ॥ व ह षे ता स ना रो डी
का मि नी प द्वा लो च ना ॥ २८ ॥ श्व रा स न से स्था ता. शी श्व री श्व रा व ह्वा ना ॥
२९ ॥ म हा प्र भा वा म ह ती. म ह दे श्व र्य दायि नी ॥ स द्वा भि वा स ना ग माः
दे व मा ता मु धा स्मृ ता ॥ को षु ग व स्मि ता मा या म हा मृत व ह स्मृ ति ॥ म
हा फे र व वा ग वा. रा व रु डो भ र्य करी ॥ ३० ॥ म हा से न स्य ज न नी. प ति
ल्लो पा ल नी श्व भा ॥ नि भु म्भ भु म्भ द ल नी. म धु के र्म ना मि नी ॥ ३१ ॥

दुईषट्मनीक न्या विडा लाक्षपमदनी ॥ ३२ ॥ उग्रवता उग्रहृषा उग्रशक्र निपातिनी ॥ ३३ ॥
अपायक्षय करी उग्रशासन शासनी ॥ ३४ ॥ उग्रायुधधरी धात्री
उग्रभूषणाभूषिता ॥ महापापप्रभमनी उग्रकर्त्त करी किला ॥ ३५ ॥
रुद्रवता उग्रवता उग्रवता उग्रवता उग्रवता ॥ ३६ ॥ उग्रवता उग्रवता उग्रवता उग्रवता
उग्रवता उग्रवता उग्रवता उग्रवता ॥ ३७ ॥ उग्रवता उग्रवता उग्रवता उग्रवता ॥ ३८ ॥

गिडका ॥ खड्गिनी शूलिनी घोराङ्क काराववाटिनी ॥ ३९ ॥ पाशि
नी शक्तिनी चण्डी महाकैटलधारिणी ॥ खड्गगिनी मुण्डिनी च
वापिनी वज्रिणी यरा ॥ ४० ॥ घण्टा एव पियानित्या भैलिनी कु
ट्टिनी महा ॥ बालप्रेतघृतवती महाकैटलधारिणी ॥ ४१ ॥ नकु
लिनी चमर्पाश्रधारिणी वंशिनी ह्यमा ॥ षड्भैरिका हस्ता वद्वि
पात्रत्रिदण्डिनी ॥ ४२ ॥ भ्रूव मल्लप्रसिद्धी च वस्त्रमुद्गरधारिणी

इकारिणी डिगि मी व श्री करी कर्तु कारिणी ॥२०॥ मही कुर्म भूत
 वती महा डिगि मना दिनी ॥ त्रिभुलिनी दगि नी व धनुः कलश
 कारिणी ॥२१॥ यम कुत्र पुस्तकं च धारिणी पेत वाहिनी ॥ छुरि का
 तोमल वती महा कुसुम साहिनी ॥२२॥ नया वने धृत वती पर
 मा नैट दायिनी ॥ पारमेश्वि महा रोदी भक्त वभ्या भव प्रिया ॥२३॥
 कोमलामे भवरी कामा खेचरी दिग्वंशुती ॥ गोचरी भूचरी सौम्या य
 री

मैगी पालकी भिवा ॥२४॥ नरवि नूवरा हा जो सखा स्या विविधा न
 ना ॥ सुगम मूर्ति शील मूर्ति सूर्य मूर्ति गुणा श्रया ॥२५॥ सोम मूर्ति
 महानैट प्रभा मूर्ति महानभ ॥ क्षीर मूर्ति महा त्रिषा महा के
 लुकली भिवा ॥२६॥ यता किनीट यारम्भा मूल प्रकृति रीश्वरी ॥ मा
 तृणा मण्डल चरी सिद्धरति लक प्रिया ॥२७॥ जक्ष सहस्र मूर्ति भव
 चण्ड मूर्ति महेश्वरी ॥ महा हंस मती विलु मती विमल सिद्धिका

४८ महा खण्ड मती सिंह मती वीर मती प्रभा सुदीर मती मातै गी. सु
तक्षर महा मती ॥ ४९ ॥ विचित्र विचित्र मती वीर सिंह मती पग ॥ भैरवि
ह मती ज्ञाना महारश्मि मती कृष्ण ॥ ५० ॥ महा कोत्याग से खानी म
हादी उमरी रिका ॥ सर्वगान्धा विद्यगान्धा महा मती तामहा मुरी ॥ ५१ ॥
॥ महा वसिष्ठ निदि वीजी महा विद्या प्रभु म्विजा ॥ महा नरी द्यते जो
म्हा शिदियोगिनी भामिनी ॥ ५२ ॥ गगनाम्हा महा भद्रि महा नील

वसु कृष्ण ॥ महा चण्ड मण्डलान्धा शौनकी मधाली घनी ॥ ५३ ॥ पद
किनी चण्डकी गंधकोली मती गिनी ॥ केवर्त्तिनी चण्डकाय मती
नैका मिनि एह सी ॥ ५४ ॥ भनकी भद्रकी श्रोत्री भुमा डे धिनी रुपि
का ॥ ज्वालिनी गगणो श्री च. माया मधाली नदी ॥ ५५ ॥ विवर्त्तना न
माहा माया सुभगाने दिनी कुवा ॥ रमाने द्य भिया ने द्य महा ने द्य
सुने दिनी ॥ ५६ ॥ ईडा मरिचि विद्याम्हा मीनजा स्वाप्रवोधिनी ॥ च

तिनीरैडितीदिवा.सिद्धात्रीरक्षजास्मृता॥५॥अथिकाकालि
काशुच.साक्षात्साधुजनार्चिता॥विद्याधरीवतिनीव.मारुता
सर्वदीस्मृता॥५८॥उत्कामुखीलोकमुखीवर्तुभीवर्णमालिक
॥भीमाननाभुनंगारवा.विद्याकालप्रवर्तिनी॥५९॥भृगालि
पूतनावच.कोसकालीचकौलिकी॥योनिश्चसिद्धियोनीच.म
हायोनिश्चसुयोनिजा॥६०॥सिद्धियोनीभग्ययोनी.महाभग्या

स्त्रियोनिव॥दिवयोनीमहादिवयोनिपद्माक्षयोनिव॥६१॥म
हाभक्षणाभक्षीच.महासंहारिणीमिवा॥महारक्तेश्वरीरैडी.महाह
तात्रनाशिनी॥६२॥महायमभक्षणीच.कालसंहारघोषिणी॥काल
रात्रिर्महारैडी.वाणालीकालनाशिनी॥६३॥वीरेश्वरीवीरपूजा.का
लाग्निभयदारिणी॥महाभैरवसंहारी.वह्नाण्डात्रिहारी॥६४॥
संहारकालिकाभडा.महाभयविद्यातिनी॥सृष्टिकालीमहादि

४
का. सिद्धि काली महो ज्येता ॥ स हार कालि को डुमा. काल ग्रसन क
लिका ॥ एक काली महो भानी. काली यम समार्गिका ॥ ६६ ॥ मृत्यु काली
मंड काली. महा मा त्रै लो कालिका ॥ महा कालाग्नि काली च. परमा क
र्क कालिका ॥ ६७ ॥ काल काली महा योग. चण्ड भैरव कालिका ॥
मंत्र काली हैस काली. कम काली चंडा मरी ॥ ६८ ॥ ज्ञान काली चक्र का
ली. चक्र अंकार कालिका ॥ महा गगण काली च. स का भा सा च काः

लिका ॥ ६९ ॥ महा भद्र कालिका च. महा वला च कालिका ॥ मंडिका
ली भुडिका ली. भा सा श्री हैस कालिका ॥ ७० ॥ चण्ड भा सा कालिका
च. भा सा डामर कालिका ॥ भा सा योगी महा भा सा. भा सा गगण कालि
का ॥ ७१ ॥ भा सा खर कालिका च. भा सा मंथरु कालिका ॥ सूर्य काली
चंड काली. अग्नि काली सुभीषणा ॥ ७२ ॥ वायु काली व्योम काली
मनः काली सुव्यापिणी ॥ सर्व काली सिद्धि काली. निगलै वास्तुक

तिका ॥ ३ ॥ कालिका दंडिणी मुडा मुडा सा ले लिहान का कपाल मु
डा का ल द्वा मुडा सा काल नाभिनी ॥ ४ ॥ समय द्वा घार मुडा विकर
ला व धामनी ॥ श्री कृष्ण ता ज्ञा मुडा च भिर कपाल मुडिका ॥ ५ ॥ यो
नि मुडा प र मुडा महा मुडा च द्वा द्वा श्री ॥ छि पिणी धी वरी काली युति
एडी अंडिका प भा ॥ ६ ॥ वेश्या भो भो रिनी घो ए केवती खर की मली
गज की छि पिणी ज्ञा ना अरु की कोमल धिका ॥ ७ ॥ अग्नि वक्रा चरि

गाली र मणी चमणी जरा ॥ गोकर्णी गजकर्णी व चामुण्डा अश्वकर्णी क
॥ ८ ॥ विद्यु मुखी वसन्ती म्हा लोक माता प भा विनी ॥ ब्रह्म न ना व ह
वलो क पि ला यत ना भया ॥ ९ ॥ भगवता शा भगवत कर्णी सैद्यु स्म रा
ज मातृ का ॥ ए हो श्वरी सारदा च जल्ये श्वरी वया र्वती ॥ १० ॥ कुला ली ह
रिणी माया महा माया च मु वि का ॥ रक्त वा व महा काली घण्टा काली
विचिनी मुडा ॥ ११ ॥ उर्द्व के भी छि चमस्ता महा लक्ष्मी त्रिकोणा गी ॥

मातंगीभिवदूतीच.सिद्धीम्हापद्मदीरा॥६२॥पद्मयोनीनिगवाध
सुलिंगाभगमालिनी॥६३॥वाराण्यात्रिजद्राव्याना.त्रिशक्तिमान्
कातरा॥कपालिनीमालिनीच.कामिनीकमलालसा॥६४॥मंत्रेश
रीउग्रकाली.लक्ष्मीमालातुमालिकी॥कुलालीरक्तचाराण्या.का
मलक्ष्मीमनोहरा॥६५॥जिनमालाजिनेन्द्राच.सारदाहंसवाहिनी
॥महाग्रीवेचसुरमा.सुभक्ताचमनोहरा॥६६॥अश्वराष्ट्रापराष्ट्र

च.नगशैलाग्रवासिनी॥शुक्लकंदलभूषांगी.शुक्लकंदलधारिणी
॥६७॥दक्षिणीविकटास्याच.शिवदूतीघनस्तनी॥सर्पमालाविभू
षांगी.सर्पकुण्डलधारिणी॥६८॥सद्यश्चिन्नभिरामाला.आपादा
तावलैविनी॥वदुवेक्रावदुभुजा.वदुपादगणेश्वरी॥६९॥त्रिकोण
विभुनिलया.पञ्चक्रमनिवासिनी॥स्थूलमार्गस्थिताभूदमा.भूदम
ग्याबुद्धिबोधिनी॥७०॥मूलाधारनिराधारे.वद्विकुण्डकतालया॥स्व

सो म्हासगतिजीवा ग्लाहणी वडि सै भ्रया ॥२१॥ वल्लतंतु समुत्ताना वड
सा स्वादु तो लुपा ॥ कालचक्र भूमि भान्ना निडु मा डम नाशिनी ॥२२॥ वा
त्ताली मेघ मारी च सुवृत्ति सस्य वडनी ॥ अकाराच व काराच उ कारे क
रू पिणी ॥२३॥ डी कार वीज रूपा च डी कारावर वासिनी ॥ सिंदूर रू
पा वर्णाच सिंदूर तिल क पिया ॥२४॥ आताच व भ्य वीजा च लोक व भ्य
विना विनी ॥ गजानना हय मुखार स भाग्या एउ कानना ॥२५॥ धिर्व का

वन चारिण्य परम भ्रविडारिणी ॥ सहस्रास्या सहस्रा ह्य सहस्र भुज
धारिणी ॥२६॥ सहस्र पाद चारिण्य घेत मार्ग पुवो विना ॥ कोटि वक्रा के
टि पादा भुज कोटि धृता सदा ॥२७॥ महा मारी विनिदा च तंडा मृत्यु वि
नाभिनी ॥ चंड मण्डल सैका शा चंड मण्डल वासिनी ॥२८॥ अणि मादि
गुणो येता अस्थिरा को मरू पिणी ॥ अल्ल शिद्धि पुदा सोता दुल्ल दान
वद्यातिनी ॥२९॥ अनादि निधना पुष्टि चतुर्वर्ग फल युदा ॥ गिरि क

लिपिती काभा सरकु सुदलोचना ॥ भूतभवा भविष्यता भूतभावनभा
विनी ॥ १०० ॥ कामसागरता वासा शिव वासा रुवासिनी ॥ मंगला च सु
शीला च पेत मार्ग पवो विनी ॥ १०१ ॥ कुजि क्य च कुजा कुजा माताम
लिनिसानया ॥ ज्वाला मुखी वेगवती उमा शुष्का महेश्वरी ॥ १०२ ॥
शुभा कामा च पकृति घोषिणी रावण विनी ॥ क्रमसा एतल मध्यस्थ
क्रमेशी च नवात्मिका ॥ ब्राह्मी रौद्री मुहवती वैष्णवी घोषा रुपिणी

॥ नारसिंही शक्रवती चासु एत च चिकामगा ॥ १०३ ॥ भवा विद्विभगः
स्थाव न हो भाग्यमहावता ॥ योगिनी समिनी रम्या रत्न केचुकधारि
णी ॥ १०४ ॥ गजचर्मवती गीत व्याघ्रचर्मकटिस्थिता ॥ सिंहचर्म
नितंबी च कालचर्मोत्तरीयका ॥ १०५ ॥ विश्वलक्ष्मी विश्वमाता ॥
जातारूपश्चरुपिणी ॥ सर्वमश्रमयी विद्या सर्वमश्रितरायणी ॥ १०६ ॥
मातृमा एतल मध्यस्था मातृमा एतलवासिनी ॥ कुमा एतलनीशुद्ध

सुमुखी पापनाशिनी ॥ १०८ ॥ मानलक्ष्मी च सुभगा शीतला भीतसे
युता ॥ दिव्यसैमदा काली च पातालस्योदकालिका ॥ १०९ ॥ मृत्युं
जायात ध्वजा यमध्वजनिवारिणी ॥ अघराजिता च भुजिता रामणी
रामनाशिका ॥ ११० ॥ शुक्लशुक्लमुखी धामाविकरालिकरालिनी ॥ रा
ममाता रामयुक्ता राजदा राजपूजिता ॥ १११ ॥ भिवा महंतारिका च
विभावा महारिषभा ॥ मनोनुगा कौलिनी च विश्वेशाया जतारिः

णी ॥ ११२ ॥ रक्ताक्षयिया घोरा काला के कना घना ॥ कर्णमोरी च यो
गेशी विनयानमुवासिनी ॥ ११३ ॥ कलंकमालिनी काज्ञानायणी
जगद्धिता ॥ अहृद्दहासिनी हासा वज्रयुष्मालिमालिनी ॥ ११४ ॥ यत्र
प्रमथनीतत्र माता मत्रयकाश्रिनी ॥ रुरुदेवी ललसिद्धिदा धामात्र
भवरी गवी ॥ ११५ ॥ मरीचिकाली कालघ्नी कालचर्मविभूषणी ॥
धामाता कालिका धूमकाली विश्वविमर्दनी ॥ ११६ ॥ सैश्यामकालि

का कालवेचनी राववादिनी ॥ जालाननी कराली वधू काली रा
पिया ॥ ११० ॥ अमरात्र काली वचणी भुवनमालिनी ॥ कुलिकात्र
काली व. माहेभी कृतपि गला ॥ १११ ॥ पातालिन्यपापहरा. पाताल
स्फोटिनी भिवा ॥ एवराविनी गैडा स्या. गर्भस्त्री भद्र कालिका ॥ ११२ ॥
अष्टवक्रा वरायुगे. श्वरी पत्नी गिरा स्मृता ॥ मृडानी वस्वधा स्वाहा वृ
धुर्ग गाम होई ता ॥ १२० ॥ आटे भ कालिका शोभ. काली मेला प कालि

का ॥ आकर्ष काली आकर्षी भोत्रिनी नेत्र कालिका ॥ १२१ ॥ पारमार्क मई
काली. नेत्र काली सुराश्रिता ॥ भक्तवशा भक्तसेव्या कमला लय वासि
नी ॥ १२२ ॥ पञ्चपाणे श्वरी पाणारक्षणी रक्तवर्णि का ॥ आर्क भरी विडुप
लाक्षा. नैद भडा जितान घा ॥ १२३ ॥ मनोमनी महादंष्ट्र करवीरणि
वासिनी ॥ करवीर श्मभानस्था. लक्ष्मीवनयुक्ता ॥ १२४ ॥ युद्धास्त्रिनी
गिरिसुता. गणनाथ जय करी ॥ चण्डो सुरनिहर्त्री वचणी भुवदधारिणी

आशा शिवाथ

1.735

ASHA ARCHIVES

आशा शरदाथ

1.735

ASHA ARCHIVES

॥१२५॥ ब्रह्मकं कालसंलग्नविष्णुलंकारभूषिता ॥ महासमश्रु
काचमहाभीषणकालिका ॥१२६॥ कुंदयुष्मपिया ॥
कुसुमपिया ॥ स्वयंभूकुसुमानेदाहतीषद्वसमाग्रपा ॥१२७॥ वेश्य
चभौण्डनीवाह्मीखंडकीछियाणीकुली ॥ राजकीवालिनीवा
लवामीधामाधनपदा ॥१२८॥ कैवर्त्तीभट्टकीकौलीवालिनीक्षेत्रि
नर्त्तिनी ॥ चक्रिणीपोक्षशीभूडीधीवरीचर्मकारिणी ॥१२९॥

मातङ्गीनट्टकीवैश्यावायकीमोनकीपरा ॥ वराह ॥ वीजिनवि
श्यामहासमत्तनजोशुकी ॥१३०॥ महाक्रमनकलीचकालको
लीचकालिका ॥ महागगणकालीचरकाभासाचकालिका
॥१३१॥ मनतीकालिकारूपाकालीकनककालिका ॥ भट्टका
लीमहाकालीकालिकाब्रह्मकालिका ॥१३२॥ स्वर्णकोरेभूरी
कालीराजराजेश्वरीस्मृता ॥ महाउमरकालीचभासाकालीच

मिनी ॥३३॥ गुह्यभरी महाकाली महाभूलाग्रकालिका ॥ योगि
नी कालिका देवी वनदुर्गा वनप्रिया ॥३४॥ मातंगी महिराम
ना नरसी सरता सदा ॥ भवरी शावरी शैला भरणगततस्य रा
॥३५॥ वेंसरवा रुपा देवी महेशी मन्त्रगामिनी ॥ उद्धेके भिनि
को माख्या चक्रके भिनि मर्दनी ॥३६॥ डोघकाली वफे काली का
ली श्रीशैलिका तथा ॥ धर्मकाली ज्ञानकाली राविनी कालिकाप

रा ॥३७॥ लीलावती कालिका चंडी मती कालिका ततः ॥ छूरिका
कालिका पाण्डे काराव कालिका ॥३८॥ महाफेरव काली वम
हाकरालिका कालिका ॥ मादिनी कालिका माया स्वामिनी नाम क
लिका ॥३९॥ हासिनी कालिका काली काली भुवन मोहिनी ॥
सृष्टिकाली स्थितिकाली संहारकालिका कला ॥ हंसकाली य
मकाली कालेग्रसन कालिका ॥ विन्धा चकारिणी काली वृषभ

धज कालिका ॥ १४१ ॥ कर्कट धज काली च गुरु उ धज कालिका ॥ मयू
 रवाहिनी काली है म धज निवासिनी ॥ १४२ ॥ काल रात्री महा काली
 चण्ड योजेश्वरी स्मृता ॥ कलालिका कुलभी च महा नंद न चारि
 णी ॥ १४३ ॥ विंध्यवासिन्य पूर्णेशी वीरसि परिपूजिता ॥ वीरेश्वरी क
 लिका च महा कृतान्त कालिका ॥ १४४ ॥ रक्त रक्तेश्वरी काली का
 लाग्नि कालिका परा ॥ फेत्कारि कोष्ठी चण्ड माई श्वरी वन्द्यभा ॥ १

णी

१४५ ॥ अष्टांग त्रिपुराता रा उग्रता रा कलै किनी ॥ कात्री रिका च वारा
 हि वारा वदना घना ॥ १४६ ॥ अंधिनी रुंधिनी काली स्तम्भिनी मोहिनी
 कला ॥ जम्भिनी जयदा जैत्री जगद्व्याज गत्य सुधा ॥ १४७ ॥ डाकिनी राकि
 नी काली लाकिनी शाकिनी गणा ॥ काकिनी हाकिनी मीला याकि
 नी धातुवासिनी ॥ १४८ ॥ अणिमाला घिमा भात्रि महिमा महदा धिता ॥ १४९
 मित्त काली वाभित्वा भावरी सारगामिनी ॥ १५० ॥ कै काल तारण चत्री

हापितृवनेश्वरी॥भमशानवासिनीरौंडी.घोरघोरतनुश्रिता
॥५०॥सुहृत्सिन्धुसैहार.कारिणीविश्वधारिणी॥त्रिमार्ग
तिसैवारीब्रह्मविनिवासिनी॥५१॥षट्चक्रभेदिनीगुह्याभक्त
नसवासिनी॥जनीजनित्रीजननीजयसातृगणेश्वरी॥५२॥ब्रह्म
विद्याब्रह्मवेद्याब्रह्माण्डकोटियापिणी॥यामावारतायामाजना
दक्षिणाकालिका॥५३॥कारिणीरसवतीटकारविबुधेश्वरी॥स

क्तकेभीविरूपाक्षीजगदानंददायिनी॥५४॥रुकेश्वरीवरुकारच
क्रमार्गनुसारिणी॥सहस्रकोटिसूर्यानीतेजसातेजश्रिनी॥५५॥
सहस्रकोटिसोमानाममृतश्रावणीषट्गुह्याद्यायोगिनीप्रज्या.स
दामृतामृतपुट्टा॥५६॥सप्तविंशतिस्तुष्टा.त्रिपुरानवलोचना॥स
रस्वतीवगायत्रीसावित्रीमंगलेश्वरी॥५७॥वाग्मादिनीकैभररी.क
र्मबंधविमोहिनी॥वर्णेश्वरीवर्णमयी.वर्णमालाविराजिता॥५८॥

त्रिलोकजननी गोघ्नी तान्या गगना गामिनी ॥ वैवभूतप्रिया नित्या
वैवपिण्डप्रपूजिता ॥ ५८ ॥ भद्ररूपिणी आकाशे प्रकोशे तेजरूपि
णी ॥ गंधरूपिणी भूम्यां च यवने स्य भेरूपिणी ॥ ६० ॥ रसरूपिणी
तोयेषु वैवभूतस्वरूपिणी ॥ सुरात्रीरूपिणी पुष्पे दुर्गसायि स्वरूपि
णी ॥ ६१ ॥ परंब्रह्मात्मिका काली जयउधवरप्रदा ॥ दुर्वासासिद्धिदा
त्री च गङ्गासी ह्योभिणी तथा ॥ ६२ ॥ जयवागेश्वरी ह्री श्री विद्यास्यः

ॐ श्री
स्तिपुराश्रिता ॥ त्रिपुरभैरवी संक्रान्ता कालिकालयभैरवी ॥ ६३ ॥ वैत
नभैरवी देवी चण्डभैरवी सिंहिका ॥ संपत्प्रदा भैरवी च मार्गभैर
विमार्गिनी ॥ ६४ ॥ जयश्रीभैरवी काली मनोभादनभैरवी ॥ हरसिद्धि
प्रयच्छांति हारिणी दानवाककी ॥ ६५ ॥ पूर्णेश्वरी पूर्णमना प्रवर्द्ध
वप्रपूजिता ॥ पूर्णपात्रतानित्या सदाचारविवारिणी ॥ ६६ ॥ पूर्ण
वीर्यि तदात्री च सदा सदीप्तिता गणी ॥ कालिकालय काली च स

विज्ञानप्रदायै वा ॥१६७॥ यो जेश्वरी महाचण्ड मदीहाममहोगणी
॥ सुहिमिती चमैहारा अनाख्या भाषकालिका ॥१६८॥ गुरुकाः
सी विश्वमाता निर्वाणेश्वरी परेश्वरी ॥ श्लोक १७६ ॥ ॐ ईति श्री य
रमेभान्या १२ सो व्रनामसहस्रक ॥ स्मृता मन्त्रोपनिषद महापातकन
भनै ॥१॥ महा मन्त्रोपनिषद विश्वेश्वरी विश्वरूपिणी ॥ दोषाणी चराश
योद्या मेरुसण्डलसैनिभा ॥ षट्पद ह्यनेनैतद्विषय मिश्रनानियथा ज्ञि

ना ॥२॥ स्नानेन कोटि तीर्थाना मन्त्रकोटि जपादिभिः ॥ धेनूनी कोटि द
नेन विद्याणी कोटि भोजनैः ॥३॥ कोटि धा कोटि होमेन तपसा जन्मक
टिषु ॥ महीकाञ्चनसैयुर्णा मन्त्रदीपाडि सागरी ॥४॥ दत्वा चराचरस
र्वान् यत्फलं लभते कुर्वी ॥ अहं स्याम्य भवान्मा म्या भूतायी वारवेदि
ने ॥५॥ कुजे वाथ भनौ वाथ पठितवी गुरावधि ॥ एकाग्रचित्तयेद्देवी
धूपालिपरिमोदिते ॥६॥ पूष्यपुकरसैकीर्णो वलिदानपुरस्कृत ॥ सा

डैण प्रज्येसे देव शुक्लास्यनेन विन्नयेत ॥ जन्म कोटि सहस्रेण यन्मायै स
 सुपाजिते ॥ ७ ॥ अनेन वृत्तमात्रेण वीछितार्थं तमेकं वी ॥ अयुगारो ग्यमात्रे
 ति धर्मकामार्थसन्नति ॥ ८ ॥ ईहमकामानवाप्नोति त्रिरावर्त्य च स भयशा
 वीर्यसूर्योपगगे वा नवम्या सारयोत्सवे ॥ ९ ॥ सर्वशिद्धिं तमेन्नै पुणां सप्र
 मेकुलै ॥ पीठोपपीठसैद्रोह तीर्थक्षेत्राश्रमादिकं ॥ १० ॥ अमेषादेवतासिद्धौ
 गुहापर्वतकानना ॥ तच्चागमादिशास्त्राणि वेदापौराणि साधका ॥ ११ ॥ स

त्या

वृत्तत्रैवति ह्यत्रियत्रैदस्तवनायकं ॥ पठेन्नामसं हस्रनुसर्वदोषनिवर्दे
 णी ॥ १२ ॥ हिं सका ४ येन कुष्माण्डा पिभावाभूतपूतना ॥ कुरग्रहाश्रमाः
 किन्यो यवान्ये दुह्ये तस ॥ १३ ॥ इति नीराक्षसाद्योगयेवान्ये पीडकाजन
 ॥ १४ ॥ हिं सका अविनश्यति ईत्याज्ञा श्रीकरी कुर्यै ॥ १५ ॥ स भवन्निनते तत्र
 यत्रैदं तिलते गृहे ॥ सै गामे जयदं सद्ये ४ तेषी भवन्निविनश्यति ॥ १६ ॥ अयु
 भान्धनमानभूत्वा जायते शुभग ४ सुखी ॥ नद्या मत्तर्जसे मग्ना भूतायी

जो मवा सरो ॥ १६ ॥ सप्तावर्त्तन देवे श्री. तुल्ला भवति निश्चिती ॥ कन्या सीपू
जो पवारै ४ तत्मा ग्रे पापये त्यहे ता ॥ १७ ॥ तुल्ला भवति सा देवी. सर्व भडमः
वापु या त ॥ आपदु द्वा रणी नाम. घोरं कलियुगे महत् ॥ १८ ॥ सो त्र में हने
या अ न म स्का र्या. सर्व देव मयी तु सा ॥ से व पा ल य ते वि श्व. से व वि श्व
प सृ य ते ॥ १९ ॥ से व सी हर ते काले. से व वि श्व मयी श्वरी ॥ से व वि श्व मयी
श्वरी ॥ तुल्ला भवति सानेन. कि म ल य म ही त ले ॥ २० ॥ ए र्ज्य सौ र्य नि रा वा

वा. प्र भा मे र्क्ष ल भे द्ध व ॥ य स्या वृ ह्मा ए उ म खि ल. की डार्थ कं ड का य ते ॥ २१ ॥
ती का ल ग्रा स नि र ती. का ल से क र्ष णी न म ॥ भ द्र न्या ज ग त्स र्व. म त
प्रा का म रु पि णी ॥ २२ ॥ या सा न्न का रि णी का लि. का ल से क र्ष णी न म
॥ २३ ॥ परं वृ ह्म स्वरू पा सा. य र त ता नु वं धि नी ॥ २४ ॥ ज ग द्वा स र ता नि त्या. का ल
सं क र्ष णी न म ॥ या स म स्ता ज्व ल डू या ना ना का ला म हो ख णा ॥ २५ ॥
सा का ल ग्रा स नि र ता. का ल सं क र्ष णी न म ॥ ले लि ज्य मा ना म त्थ र्थ

जीषणायासुभैरवी॥२५॥महानृशिंहमारुहाकालसंकर्षणीन
म४॥अलातचक्रवद्विष्णुकीडार्थभाष्यतेयया॥२६॥तीकालग्र
सनिरतीकालसंकर्षणीनम४॥ब्रह्माण्डकोटिलक्षाणिभस्म
कुरुतेयया॥२७॥तीकालग्रासनिरतीकालकालीनमाम्यहं
॥नौमिकालीमहद्वयीप्रधानवल्लिभक्षिणी॥२८॥कीडार्थयाक
लोचित्रीब्रह्माण्डावृद्धमालिनी॥अजनादिनिभीकालीकोटिव

सूर्यभतप्रभा॥२९॥वैलोकोरश्मिगारतीमङ्गलीपुणामाम्यहं॥गुह्यक
लीमङ्गलाश्चशिद्विकालीजयेश्वरी॥३०॥चर्चिकीप्रिपुरेशीश्चका
लीवभुवनेश्वरी॥श्रीमङ्गलीमहाकालीनिर्वाणपद्मशिनी॥३१॥
मोक्षदीपज्यदीपित्यानववक्रीपणभजे॥२१०॥॥इतिउमाहारे
वमहातश्रेयसिंसतिसाहस्रेमहासर्वभर्मादितायीशिवयार्चयाः
मलस्यश्रीगुह्यकालीनेकमतमनायाधुतिदुहायसमाप्तं॥॥

ॐ नमो श्री मङ्गलाय नमः ॥ ॥ रेंधुं नमो स्तुते जगत्मात्रे. माहात्मा
या स्वरूपिणी ॥ या सा न का गि द्द ह रा. दुति ता ते ज रूपिणी ॥ १ ॥
फे का ल नि रया देवी. फे का र रा व रूपिणी ॥ फे का र ज्व र ना स स्थ
ततः फे का र मा त र म् ॥ २ ॥ श्रु त्ते दे हे नि रा ल स्ते. य रा य रा य रे शिवे
य का कि नी विश्व मा ता. नमो निर्वा ण दा यि ने ॥ ३ ॥ श्रु टे हा दे ह रूप
पि न्या. गु ण त्र ये वि ना सि नी ॥ मङ्ग ला ये नम स्ते स्तु. नमो मङ्ग ला दे

५

यि ने ॥ ४ ॥ मा हा कु ण्ड ली नी मि ने. प्रा ण धा र श्रु रूपिणी ॥ स द्भु क्त
मे टि नी या यि. मङ्ग ला ये नमो नमः ॥ ५ ॥ वी द्धि मा ण्ड ल सै स्थाने स
जो मङ्ग ल भे रि नी ॥ स्व म मङ्ग ल सै स्थाने. नमो मङ्ग ल मङ्ग ले ॥ ६ ॥
य का कि णी विश्व मा ते. का लि म न्द्र ल सै स्थिते ॥ का लि पञ्च क म
नि त्यं. विश्व लक्ष्मी नमो स्तु ते ॥ ७ ॥ ह्रीं का र का रि नि नी त्यं. कुं का र य
रि ना टि त्य ॥ फे का र ना ट सै भू ते. नमो स्ते का ल ना सि नि ॥ ८ ॥ ज

यमे गलमातामे जय कालाक्ष कालहृत् ॥ जय लक्ष्मीजयोद्भूते जय
कालीनमोस्तुते ॥ १२ ॥ गजवक्त्रे नमस्ते तु नमस्ते वटकाय च ॥ धात्र
पालनमस्ते ह कालशमनमोस्तुते ॥ १० ॥ एक कालीनमस्ते तूष्णे
त कालीनमोस्तुते ॥ माहा कालीनमोस्ते तू मृत्यु कालीनमस्तुते ॥
११ ॥ भद्र कालीनमो नित्यै पद्म कालीनमोस्तुते ॥ मार्तण्ड कालि
का देवी रुद्र कालीनमोस्तुते ॥ १२ ॥ हंस काली शममस्ते तू कालका

लीनमोस्तुते ॥ व्योम काली सूर्यो कालीनमस्ते जय कालीका ॥ १३ ॥ सृ
ष्टि कालीनमस्ते स्तु तिथि कालीनमोस्तुते ॥ संहार कालीका देवी
नमो फकार रूपिणी ॥ १४ ॥ अनाख्याये नमस्ते तू भासा कालिनमो
स्तुते ॥ गुह्यो कालीनमस्ते तू नमोस्ते विश्वमातर ॥ १५ ॥ अति ते ज
जमास्ते तू शिद्धिदाये नमोस्तुते ॥ १६ ॥ नववक्त्रा महा काली नील
जी घृतमंजिभा ॥ १६ ॥ अस्तो तं शतार्थै च दैर्घ्यै रूपै सोमिताः ॥

सप्तविंशतिमुदस्था. नानास्तेषु सोमिता ॥१७॥ सिंह स्फुरक थि
गाक्ष. तार्क्षमकरटंतिनी ॥ हर्यंजर मुखेः कालि. सर्वोत्तमै सु
पूजिताः ॥१८॥ मकाले माहिनी सस्था. चकारे ईश्वरी स्थिता ॥
निर्वानेशी खमा रुढा. फकारे स्थितिका लिका ॥१९॥ मकारे तूमहा
मायामकारे मोदिनी स्मृता ॥ हाकारे चर्चिका देवी. चकारे चन्द्र दीधि
का ॥२०॥ नकारे नीरयाषोक्ता. दकारे दामरी स्मृता ॥ यकारे वायुर्क

रीच. ओकारे वेदमातृका ॥२१॥ गकारे गगनोशीच. चकारे ऐन्दु
मातृका ॥ सकारे सवरी पूज्या. वकारे वारुणि स्मृता ॥२२॥ मकारे
सिद्धिदासेव्या. कालीचक्रयुक्ता सिनी ॥ गगानाथेन दक्षत्रेण. वट्टके
नममं वितं ॥२३॥ बह्नीमाहेश्वरिस्कादी. वैष्णवी दीर्घा सिनी
वज्रिनी चर्चिका लक्ष्मी. पंचवक्त्रैव्यवस्थिता ॥२४॥ भद्राद्याः
जगसर्वमातृका कामरूपिनी ॥ यासीत कालिनी काली का

लसै कर्षनी नमः ॥ २५ ॥ परं ब्रह्म स्वरूपाया परतत्वा नूरो धिनी ॥
जगत् सरती यास्तु कालसै कर्षनी नमः ॥ २६ ॥ या समस्ता ज्वल
द्वया नानाकारा महेस्वका ॥ सा कालग्रा सरसिका कालसै क
र्षनी नमः ॥ २७ ॥ लेलिज्यमानसुभृसी भीषनाया सुभैरवी ॥ ती
कालग्रा सरसी की कालसै कर्षनी नमः ॥ २८ ॥ अलीतचक्रव
द्विभ्यै क्रीदार्थं प्रास्थते यया ॥ ती कालग्रा सरसी का कालसै

कर्षनी नमः ॥ २९ ॥ ब्रह्मानन्दकोटिरध्वानी भस्मसां कुरुते य
या ॥ ती कालग्रा सरसी का कालसै कर्षनी नमः ॥ ३० ॥ नौमि
कालिकलारे स्या यधाना वलिभञ्जनी ॥ क्रीदार्थं या करोति
त्री ब्रह्मा एते बुद्धमालिकीः ॥ ३१ ॥ इति श्री माया मङ्गला स्तवः
समाप्तः ॥ ॥ विष्णु श्री लक्ष्मी कारिणी भगवती ब्रह्मादि वा मा
योगाक्षित्या दिक्षो यत त्वसी भवकुं ली श्री भैरवाद्या परा ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीकालिकाय नमो नमः ॥ कपालिका लिके करवरक
 पारिरसवरिः भवानिबानिजिबिभुवनवषानिजसकरिः ॥ १ ॥ विधाता मा
 तातुसक सुषदाता दुःखहरि हकि हा लाज्वा ला सुरत सिरमाता उरधरिः ॥
 २ ॥ सुरंगि मातंगि सुभक मर अगि ह विवनिः गुणाणां रिप्यारि सव सुनिः ॥ ३ ॥
 कृपा किज डिजे मम सुधि जो तिजे मम जनि मृगा न्य नि अं व्य अद्य हर न ते
 रे वरा ए हें ॥ ४ ॥ पहि जानो जि मे ते नम न वि ते रे सर न हें ॥ शम शानि कल्या नि

सक रज गण निज स करिः ॥ ५ ॥ समाह्वं गुधं अमन गुण गुधं सुत धीरं च राधारि
 प्यारि अ सुर गुण हारि दुःख हरिः ॥ ६ ॥ ह विरि भोरि ति सुषधु निर सिरि सुनि सुः
 निः ॥ ७ ॥ उ ना रा मा त्या मा सि व ज प ति ना मा हि न दि नाः ॥ ८ ॥ स ति सि ता गि ता सुर न
 र अ ति ता गु ण गु णा अ ष डि वा ह्मं डि य न के न के वं दि त्व म वि नाः ॥ ९ ॥ तु हि क न्या
 धं न्या प द रज स कं च्या ति स दि नाः तु हि वे द व्या सि स का सु ष दा ता सि व म ई ॥ १० ॥ त दि
 रु ती क ता प व न ज र पृ थि ग ग न हें तु हि म न दि मा नि त्री भू व न व षा नि व स करिः ॥

१० ॥ तु हि म न दि मा नि त्री भू व न व षा नि व स करिः ॥
 विरचित श्रीकालिका स्तोत्रं स
 मा प्रोक्तं श्रीकालिका
 तरे सर न हें ॥ इति श्रीकालिका स्तोत्रं स